

दिव्य दर्शनीय स्वरूप कैसे बनें...



राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गतांक से आगे...

जैसा कि पिछले अंक में आपने पढ़ा कि चारों ही अलंकार में सबसे पहला है शंख, तो जो बाबा का परिचय सबको सुनाते रहते हैं, शंख ध्वनि तो चलती रहती है चलते-फिरते भी। दूसरा कमल पुष्प समान जीवन तो है ही है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं तो सभी ने पवित्रता को धारण किया है। माना कमल पुष्प भी पकड़ा है। तो दो अलंकार तो पकड़े हैं। और तीसरा है ज्ञान की गदा। तो मुरली भी कभी मिस नहीं करते हैं। मुरली भी रोज सुनते हैं। तो तीन अलंकार तो पकड़े हुए ही हैं

बनो। स्वदर्शनचक्र को घुमाओ। क्यों घुमाने के लिए कहता है? उससे क्या होगा? तो बाबा ने कई मुरलियों में सुनाया है कि बच्चे जितना स्वदर्शनचक्र घुमायेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। जितना स्वदर्शनचक्र घुमायेंगे आत्मा पावन बनती जायेगी। आत्मा को पावन बनाने के दो तरीके हैं। एक आत्मा को पावन बनाने के लिए ज्वाला स्वरूप योग की स्थिति चाहिए। जिससे हम अपने पास्ट के पाप कर्मों को, विकर्मों को जला दें। बाकी जैसे रूहरिहान की स्थिति है,

स्वदर्शनचक्रधारी सो विश्व दर्शनीयमूर्तधारी...

सबने। रह गया तो कौन-सा रह गया? स्वदर्शनचक्र। ये घूमता नहीं है। स्वदर्शनचक्र ही छूट जाता है हमारा। और बाबा रोज लगभग साकार मुरली के अन्दर कहते हैं बच्चे स्वदर्शनचक्र धारी

बाबा के साथ सर्व सम्बन्ध की स्थिति जो है, ये सारी स्थितियां देही अभिमान की स्थितियां हैं, इनसे विकर्म विनाश नहीं होते। विकर्म विनाश करने के लिए चाहिए ज्वाला स्वरूप स्थिति चाहिए, बीज स्वरूप स्थिति चाहिए। बाबा कहते अगर वो थोड़ी घड़ी के लिए भी अचीव हो जाये तो भी बहुत जन्मों के विकर्म विनाश कर दे, वो इतनी पॉवरफुल स्टेज है। लेकिन वो पहुंचने नहीं देती है, पहुंचते-पहुंचते जाते हैं और बस पूरा हो जाता है। इसलिए उस स्टेज तक नहीं जा पाते हैं, लेकिन दूसरा सरल तरीका जो बताया बाबा ने साकार मुरली के अन्दर कि बच्चे आप गोले के सामने बैठ जाओ, झाड़ू के सामने बैठ जाओ, सीढ़ी के सामने बैठ जाओ और चक्र घुमाना चालू करो। अच्छा वो भी नहीं हो पाता है तो कम से कम आठ बार पाँच स्वरूप का चक्र घुमाओ। ये तो सहज है?

कम से कम एक दिन में भी अगर आठ बार घुमाया तो कहते हैं जैसे स्वदर्शनचक्र घुमाने से असुरों का

स्वरूप में कितनी प्यारी मूर्त है मेरी। वो प्यारी मूर्त को महसूस करो, अपने अन्दर अनुभव करो। और त्रेतायुग के अन्त तक हम दिव्य स्वरूप में रहे ये फील करते जाओ। फिर द्वापर में पूज्य स्वरूप भी कितना न्यारा और प्यारा है। जिसको भक्त इतना प्यार से याद करते, देवियों को, गणेश जी को, हनुमान जी को। ये सारे देवताओं को याद करते हैं तो वो हमारा ही स्वरूप

विकर्म विनाश करने के लिए चाहिए ज्वाला स्वरूप स्थिति चाहिए, बीज स्वरूप स्थिति चाहिए। बाबा कहते अगर वो थोड़ी घड़ी के लिए भी अचीव हो जाये तो भी बहुत जन्मों के विकर्म विनाश कर दे, वो इतनी पॉवरफुल स्टेज है।

गला कटा तो जितना स्वदर्शनचक्रधारी बनेंगे तो हमारे पास व्यर्थ का चक्र नहीं चलेगा और उसका गला कटता जायेगा। उसकी जड़ें कटती जायेंगी। इम्यूरिटी से मुक्त होना सहज हो जायेगा। इसलिए स्वदर्शनचक्रधारी सो विश्व दर्शनीयमूर्तधारी सहज बन सकते हैं। इसीलिए आज से अभी क्या करना? जब भी आप बाबा को याद करने बैठें, चलते-फिरते कर्म करते भी पाँच स्वरूप का चक्र घुमाते रहो, घुमाते रहो। कैसे घुमायेंगे? परमधाम से शुरू करो, मैं आत्मा निराकारी स्वरूप में स्थित हूँ। फिर परमधाम से नीचे उतरे देवता स्वरूप में, तो देव

है। फिर ब्राह्मण, बाबा के राज-दुलारे। तो उस राज-दुलारे स्वरूप में अपने आपको देखो कि मैं बाबा का राज-दुलारा हूँ। और फिर फरिश्ता, एकदम प्यारा स्वरूप। एकदम लाइट का स्वरूप। इस तरह से फास्ट घुमाओ। जैसे-जैसे आदत पड़ती जायेगी स्वदर्शनचक्र घुमाने लगेगा आपका तो जब कोई चीज की आदत पड़ती है तो कॉन्शियसली ना भी हो लेकिन सबकॉन्शियस लेवल पर वो चलता ही रहता है।

तो इसीलिए बाबा कहते स्वदर्शनचक्रधारी सो विश्व दर्शनीयमूर्तधारी।

सेल्फ हेल्प



आपने क्या कभी ये सोचा कि हम सभी जब कभी आराम से बैठें और साक्षी होकर अपने आप को देखें तो आप देखो जो भी आपके अन्दर विचार आते हैं, जो भी आपके अन्दर संकल्प चलते हैं वो सारे विचार और संकल्प परिस्थिति से, व्यक्ति से, वस्तु से या सामने वाले वातावरण से प्रभावित होकर चलते हैं। आपने जो देखा है, जो सुना है, जो पढ़ा है उसके आधार से सोचते हैं। तो क्या वो सही हो सकता है? अगर वो सही होता तो सभी के लिए सही होता। लेकिन कई बार आप देखते होंगे कि कई बार लोगों का ही बहुत सुन्दर अनुभव है कि जब हम ये वाली सारी

हमको मालिक बनना है... गुलाम नहीं...

चीजें सोच रहे होते हैं, बोल रहे होते हैं, देख रहे होते हैं तो उसमें हम ये पाते हैं कि हम उन बातों से प्रभावित होकर अपने आपको डिस्टर्ब करते हैं। ये सिद्ध करता है कि आज हम सभी गुलाम हैं। हरेक चीज के, हर एक वस्तु के गुलाम हैं, हर एक बात के गुलाम हैं। अपने आदतों के गुलाम हैं, तो जो गुलाम है वो आप सोचो कैसे जी रहा होगा! अगर इसका उल्टा कर दिया जाये कि हमारे संकल्पों से, हम जो संकल्प करें लोग वैसा सोचें। हम जो बोलें लोग वैसा बोलें, हम जो देखना चाहें लोग हमारी आँखों से वैसा ही देखना चाहें। तो कितना सुन्दर वातावरण बन जायेगा।

सिर्फ यही परमात्मा हमको सिखाते हैं कि हम बाहरी दुनिया के गुलाम हैं। हमको मालिक बनना है, गुलाम नहीं बनना है। मतलब बाहर की परिस्थिति जो आपको दिखा रही है वो आप देख रहे हैं। बाहर व्यक्ति जो आपको दिखा रहा है वो आप देख रहे हैं। अपने आपसे वो बात नहीं कर पा रहे हैं। यही है आदतों का, संस्कारों का, बातों का गुलाम होना। और ये आदत, संस्कारों और बातों का गुलाम होना बहुत आसान है। इसलिए हमको सबसे पहले इन सब बातों से बाहर निकलना बहुत जरूरी है। तो सबसे पहले आज हमने सोचा है, देखा है, उसके आधार से नहीं सोचना है लेकिन जो मैं हूँ उसके आधार से आपको सोचना है। आदत कोई भी बुरी नहीं है लेकिन उस आदत का हमारे ऊपर हावी हो जाना बहुत बुरी बात है। तो चलो ये वाले काम भी करके देख लेते हैं आज।



बहल-हरियाणा। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा बहल के राजीव गांधी खेल स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शकुंतला दीदी ने प्रिंस डिफेंस एकेडमी के 100 प्रशिक्षुओं को नशामुक्त बनने का संदेश दिया व कभी भी नशा ना करने की प्रतिज्ञा कराई। साथ ही खेल प्रशिक्षक अरुण पुनिया को ईश्वरीय सौगात व साहित्य भी भेंट किया। इस मौके पर पूर्व प्राचार्य बिमला देवी श्योराण, ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. स्वाति बहन, मीणा चंदा, दीपक चौधरी, रोशन शर्मा, विक्रम सोनी आदि मौजूद रहे।



पुखरावाँ-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं महिला जिला मोर्चा अध्यक्ष रेणुका सचान, ब्र.कु. ममता दीदी, ब्र.कु. कोमल बहन, ब्र.कु. ललिता बहन व ब्र.कु. कल्पना बहन।



पटियाला-मॉडल टाउन(पंजाब)। विश्व पर्यावरण दिवस पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. राखी बहन, ब्र.कु. दिव्या बहन, अतिथि संजय भाई, 21वीं सदी के ऑटो मोबाइल वितरण घर के सीईओ, शारदा मुलतानी महिला सेल सदस्य, जीवन जिंदल पूर्व एन.इलेक्ट. सहित अन्य भाई-बहनें व बच्चे शामिल रहे। इस मौके पर सभी ने पौधारोपण कर प्रकृति के संरक्षण का संकल्प लिया।



सादाबाद-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर नगर पंचायत सादाबाद के तत्वाधान में सादाबाद इंटर कॉलेज में आयोजित सामूहिक योग कार्यक्रम में विशेष रूप से आमंत्रित किये जाने पर ब्रह्माकुमारीज की ओर से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. भावना बहन व समाजसेवी सोम वाण्येय शामिल हुए। इसके साथ ही कार्यक्रम में उपजिलाधिकारी संजय कुमार, नगर पंचायत अध्यक्ष हेमलता अग्रवाल, समाजसेवी राजू अग्रवाल व नगर के अन्य प्रबुद्धजन मौजूद रहे।



मुंगरा बादशाहपुर-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के दिव्य प्रकाश भवन सेवाकेंद्र पर विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में ब्लॉक प्रमुख सतेन्द्र सिंह, इसराजी इंटर कॉलेज की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रियंका यादव, थानाध्यक्ष संतोष कुमार पाठक, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. अनीता बहन सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।



ठाकुरगंज-बिहार। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अशोक का पौधा लगाकर उसे जल से सींचते हुए ठाकुरगंज प्रखंड के जनपथ समाचार के सवादादाता संजीव कुमार सिंह, ब्र.कु. शारदा बहन तथा अन्य।